0974CH08

प्रत्यय

किसी भी धातु या शब्द के पश्चात् जुड़ने वाले शब्दांशों को प्रत्यय कहा जाता है।

- धातुओं में जुड़ने वाले प्रत्ययों को कृत् प्रत्यय कहते हैं। ये प्रत्यय तिङ् प्रत्ययों से भिन्न होते हैं।
- संज्ञा शब्दों में जुड़ने वाले प्रत्ययों को तद्धित प्रत्यय कहते हैं।
- पुँल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए शब्दों में प्रयुक्त होने वाले प्रत्ययों को स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

1. कृत् प्रत्यय

जिन प्रत्ययों को धातुओं में जोड़कर संज्ञा, विशेषण या अव्यय आदि पद बनाए जाते हैं उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं।

i) अव्यय बनाने के लिए धातुओं में 'क्त्वा', 'ल्यप्', 'तुमुन्' प्रत्ययों का योग किया जाता है।

ii) धातु से विशेषण बनाने के लिए 'शतृ', 'शानच्', 'तव्यत्', 'अनीयर्', 'यत्' आदि प्रत्ययों का योग किया जाता है।

iii) भूतकालिक क्रिया के प्रयोग के लिए 'क्त', 'क्तवतु' एवं 'करना चाहिए'— इस अर्थ के लिए क्रिया के वाचक 'तव्यत्', 'अनीयर्' और 'यत्' प्रत्ययों का प्रयोग करते हैं।

iv) धातु से संज्ञा बनाने हेतु 'तृच्', 'क्तिन्', 'ण्वुल्', 'ल्युट्' आदि प्रत्ययों का योग किया जाता है।

कतिपय प्रमुख कृत् प्रत्ययों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है—

KAMBOZ SIR

क्त्वा प्रत्यय

वाक्य में मुख्य क्रिया से पूर्व किए गए कार्य में पूर्वकालिक क्रिया को व्यक्त करने के लिए धातु में क्त्वा प्रत्यय का योग किया जाता है।

यथा— मयूर: मेघं दृष्ट्वा नृत्यति। यहाँ दृष्ट्वा में 'दृश्' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय का योग किया गया है। यह क्रिया नर्तन क्रिया की पूर्वकालिक क्रिया है।

उदाहरण—

कृ + क्त्वा	= कृत्वा	=	करके, कार्यं **कृत्वा** गृहं गच्छ।
गम् + क्त्वा	= गत्वा	=	जाकर, आपणं **गत्वा** फलम् आनय।
नम् + क्त्वा	= नत्वा	=	नमन करके, सरस्वतीं देवीं **नत्वा** पाठं पठ।
पा + क्त्वा	= पीत्वा	=	पीकर, दुग्धं **पीत्वा** शयनं कुरु।
श्रु + क्त्वा	= श्रुत्वा	=	सुनकर, **वार्तां श्रुत्वा** आगतोऽस्मि।
दृश् + क्त्वा	= दृष्ट्वा	=	देखकर, बहि: **दृष्ट्वा** आगच्छामि।
हन् + क्त्वा	= हत्वा	=	मारकर, राम: रावणं **हत्वा** सीतां प्राप्नोत्।
प्रच्छ् + क्त्वा	= पृष्ट्वा	=	पूछकर, गुरुं **पृष्ट्वा** आगच्छामि।
त्यज् + क्त्वा	= त्यक्त्वा	=	त्यागकर, सीतां वने **त्यक्त्वा** लक्ष्मण: आगत:।
स्पृश् + क्त्वा	= स्पृष्ट्वा	=	छूकर, मम मित्रम् मां **स्पृष्ट्वा** गत: ।
ज्ञा + क्त्वा	= ज्ञात्वा	=	जानकर, परीक्षाफलं **ज्ञात्वा** स: अति प्रसन्न: अस्ति।
पठ् + क्त्वा	= पठित्वा	=	पढ़कर, अहं पुस्तकं **पठित्वा** ज्ञानं प्राप्स्यामि।
पत् + क्त्वा	= पतित्वा	=	गिरकर, अश्व: **पतित्वा** उत्थित:।
पूज् + क्त्वा	= पूजयित्वा	=	पूजकर, देवीं **पूजयित्वा** मेलापकं गमिष्यामि।

'क्त्वा' प्रत्ययान्त शब्दों का भी अव्यय के रूप में प्रयोग होता है, क्योंकि ये अव्यय होते हैं। इनके रूप में परिवर्तन नहीं होता है।

ल्यप् प्रत्यय

पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ में 'ल्यप्' प्रत्यय का भी प्रयोग होता है। जहाँ पर धातु से पूर्व कोई उपसर्ग लगा होता है, वहाँ 'क्त्वा' के स्थान पर 'ल्यप्' प्रत्यय का

KAMBOZ SIR

प्रयोग किया जाता है। 'ल्यप्' प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय के रूप में ही प्रयोग किए जाते हैं। इनके रूप में भी परिवर्तन नहीं होता है।

उदाहरण—

प्र + नम् + ल्यप्	= प्रणम्य	=	प्रणाम करके, गुरुं **प्रणम्य** स: पठति।
वि + ज्ञा + ल्यप्	= विज्ञाय	=	जानकर, वार्तां **विज्ञाय** त्वम् आगच्छ।
आ + गम् + ल्यप्	= आगत्य	=	आकर, गृहात् **आगत्य** स: पाटलिपुत्रं गतवान्।
आ + दा + ल्यप्	= आदाय	=	लाकर, किम् **आदाय** स: समायात:।
वि + स्मृ + ल्यप्	= विस्मृत्य	=	भूलकर, पाठं **विस्मृत्य** स: किंकर्तव्यविमूढ: अभवत्।
वि + जि + ल्यप्	= विजित्य	=	जीतकर, शत्रून् **विजित्य** राजा प्रसन्न: अभवत्।
उत् + डी + ल्यप्	= उड्डीय	=	उड़कर, खगा: **उड्डीय** प्रसन्ना: भवन्ति।
आ + नी + ल्यप्	= आनीय	=	लाकर, शिष्य: शुल्कम् **आनीय** गुरवे दत्तवान्।
उप + कृ + ल्यप्	= उपकृत्य	=	उपकार करके, सज्जना: **उपकृत्य** विस्मरन्ति।
प्र + आप् + ल्यप्	= प्राप्य	=	प्राप्त करके, छात्र: परीक्षाफलं **प्राप्य** प्रसन्न: जात:।
प्र + दा + ल्यप्	= प्रदाय	=	देकर, निर्धनेभ्य: धनं **प्रदाय** धनिक: गत:।
सं + स्पृश् + ल्यप्	= संस्पृश्य	=	स्पर्श करके, पितु: चरणं **संस्पृश्य** स: आशीर्वादं प्राप्तवान्।
उत् + तृ + ल्यप्	= उत्तीर्य	=	उत्तीर्ण करके, दशमकक्षाम् **उत्तीर्य** स: उच्चविद्यालये प्रवेशमलभत।

तुमुन् (तुम्)— (निमित्तार्थक) 'के लिए' अर्थात् क्रिया को करने के लिए इस अर्थ में धातु के साथ तुमुन् प्रत्यय लगता है।

KAMBOZSIR

- जब दो क्रिया पदों का कर्ता एक होता है तथा एक क्रिया दूसरी क्रिया का प्रयोजन या निमित्त होती है तो निमित्तार्थक क्रिया पद में तुमुन् प्रत्यय होता है।

  यथा— सुरेश: पठितुं विद्यालयं गच्छति। वाक्य में 'पढ़ना' और 'जाना' दो क्रिया पद हैं, जिनमें पढ़ना क्रिया प्रयोजन है जिसके लिए सुरेश विद्यालय जाता है। अत: पठितुं में तुमुन् प्रत्यय है।
- समय, वेला आदि कालवाची शब्दों के योग में भी धातुओं से तुमुन् प्रत्यय होता है।

  यथा— स्नातुं वेलाऽस्ति।
  पठितुं समयोऽस्ति।
- तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय होते हैं। इनका रूप भी नहीं बदलता है।

उदाहरण—

गम् + तुमुन्	= गन्तुम्	= जाने के लिए, स: गृहं **गन्तुम्** उद्यत: अस्ति।
हन् + तुमुन्	= हन्तुम्	= मारने के लिए, मृगं **हन्तुं** सिंह: समुद्यत: अस्ति।
पा + तुमुन्	= पातुम्	= पीने के लिए, जलं **पातुं** स: नदीं गतवान्।
स्ना + तुमुन्	= स्नातुम्	= स्नान के लिए, स: **स्नातुं** तरणतालमगच्छत्।
दा + तुमुन्	= दातुम्	= देने के लिए, उत्तम: जन: ज्ञानं **दातुम्** इच्छुक: भवति।
प्रच्छ् + तुमुन्	= प्रष्टुम्	= पूछने के लिए, छात्र: प्रश्नं **प्रष्टुं** समुत्सुक: भवति।
दृश् + तुमुन्	= द्रष्टुम्	= देखने के लिए, चित्रं **द्रष्टुं** बालक: आगच्छत्।
हस् + तुमुन्	= हसितुम्	= हँसने के लिए, अहं **हसितुम्** इच्छामि।

KAMBOZ SIR

खाद् + तुमुन्	= खादितुम्	= खाने के लिए, बालक: आम्रं **खादितुम्** इच्छति।
क्रीड् + तुमुन्	= क्रीडितुम्	= खेलने के लिए, शिशु: कन्दुकेन **क्रीडितुम्** इच्छति।
भाष् + तुमुन्	= भाषितुम्	= भाषण के लिए, स: **भाषितुम्** उत्थित:।
जीव् + तुमुन्	= जीवितुम्	= जीने के लिए, सर्वे **जीवितुम्** अभिलषन्ति।
कथ् + तुमुन्	= कथयितुम्	= कहने के लिए, कथां **कथयितुं** स: आगच्छत्।

- **शक्** (सकना), **इष्** (चाहना) इत्यादि धातुओं के साथ भी पूर्व क्रिया में तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग होता है, जैसे— मैं पढ़ सकती हूँ/सकता हूँ या मैं पढ़ना चाहती हूँ/चाहता हूँ, इन वाक्यों में (पढ़ना और सकना) (पढ़ना और चाहना) ये दो-दो क्रियाएँ हैं, अत: पढ़ना क्रिया में तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग होता है,

  यथा— अहं पठितुं शक्नोमि।
  अहं पठितुम् इच्छामि।
  बालक: तर्तुं शक्नोति।
  सा गातुं शक्नोति।
  त्वं किं कर्तुं शक्नोषि।
  ते चलितुं न शक्नुवन्ति।
  वयं धावितुं न शक्नुम:।

- तुमुन् का प्रयोग करते हुए इच्छुक अर्थ वाले संज्ञा पद भी बनाए जा सकते हैं, **यथा**— गन्तुकाम:, पठितुकाम:, बद्धुकाम:, चलितुकाम:, लेखितुकामा, हसितुकामा, वक्तुकामा इत्यादि।

KAMBOZ SIR

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. प्रत्ययं संयुज्य वियुज्य वा लिखत—

i) दृश् + क्त्वा = ...
ii) प्रणम्य = ...
iii) उपविश्य = ...
iv) सोढुम् = ...
v) सह् + क्त्वा = ...
vi) आ + नी + ल्यप् = ...

प्र. 2. अधोलिखितवाक्येषु कोष्ठके प्रदत्तधातुषु क्त्वा/ल्यप्/तुमुन् प्रत्यययोगेन निष्पन्नपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत—

यथा— स: पुस्तकम् **आदाय** (आ + दा + ल्यप्) गच्छति।
स: पुस्तकं **दत्त्वा** (दा + क्त्वा) क्रीडति।

i) राम: कन्दुकम् .... (आ + नी + ल्यप्) क्रीडति।
ii) श्याम: कन्दुकम् .... (नी + क्त्वा) गच्छति।
iii) राम: कन्दुकम् .... (ग्रह् + तुमुन्) श्यामम् अनुधावति।
iv) श्याम: .... (वि + हस् + ल्यप्) कन्दुकम् ददाति।
v) राम: कन्दुकम् .... (प्र + आप् + ल्यप्) पुन: प्रसन्न: भवति।

प्र. 3. उदाहरणमनुसृत्य स्थूलपदेषु धातून् प्रत्ययान् च वियुज्य लिखत—

यथा— बालक: गुरुं **नत्वा** गच्छति। **नम् + क्त्वा**

i) स: अत्र **आगत्य** पठति। ....
ii) त्वं कुत्र **गत्वा** क्रीडसि। ....
iii) बालक: **विहस्य** वदति। ....
iv) त्वं पुस्तकं **क्रेतुम्** गच्छसि। ....
v) छात्र: **पठितुं** विद्यालयं गच्छति। ....
vi) नायक: निर्देशकं **द्रष्टुं** गच्छति। ....

प्र. 4. क्त्वाप्रत्ययस्य प्रयोगेण वाक्यानि संयोजयत—

यथा— बालिका उद्यानं गच्छति। तत्र क्रीडिष्यति।

KAMBOZ SIR

बालिका उद्यानं गत्वा तत्र क्रीडिष्यति।

i) अहं विद्यालयं गच्छामि। अहं पठिष्यामि।

ii) सीता पुस्तकं पठति। सा ज्ञानं प्राप्स्यति।

iii) स: आपणं गच्छति। स: पुस्तकं क्रेष्यति।

iv) रमेश: पुस्तकालयमगच्छत्। स: समाचारपत्रं पठति।

v) देवदत्त: पाकशालामगच्छत्। स: भोजनं करोति।

प्र. 5. तुमुन्प्रत्ययस्य योगेन वाक्यानि संयोजयत—

यथा— बालिका क्रीडिष्यति। सा उद्यानं गच्छति।

बालिका क्रीडितुम् उद्यानं गच्छति।

i) अहम् पठिष्यामि। अहं पुस्तकं क्रीणामि।

ii) बालिका परीक्षायाम् उत्तमानि अङ्कानि प्राप्स्यति। सा परिश्रमेण पठति।

iii) निशा क्रीडिष्यति। सा आपणात् कन्दुकमानयति।

iv) माता भोजनं पचति। सा शाकमानयत्।

v) आचार्य: पाठयति। स: कक्षामगच्छत्।

KAMBOZ SIR

शतृ-शानच् प्रत्यय

- एक कार्य को करते हुए जब (साथ ही साथ) अन्य कार्य भी किया जा रहा हो तो करता हुआ/करती हुई, चलता हुआ/चलती हुई, पढ़ता हुआ/पढ़ती हुई इत्यादि अर्थों को बताने के लिए परस्मैपदी धातुओं में शतृ प्रत्यय तथा आत्मनेपदी धातुओं में शानच् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।
- शतृ के 'श्' और 'ऋ' का लोप होकर धातु में 'अत्' जुड़ता है। तथा 'शानच्' के 'श्' का और 'च्' का लोप होकर 'आन' के पहले 'म्' का आगम हो जाता है। इस प्रकार धातु के साथ 'मान' जुड़ता है।
- शतृ-शानच् प्रत्ययों से बने हुए शब्द विशेषण रूप में प्रयुक्त होते हैं। अतः इनके रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

उदाहरण—

	पुं.	*स्त्री.*	*नपु.*
पठ् + शतृ (अत्)	पठन्	पठन्ती	पठत्
लिख् + शतृ	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
हस् + शतृ	हसन्	हसन्ती	हसत्
सेव् + शानच् (मान)	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
मुद् + शानच्	मोदमानः	मोदमाना	मोदमानम्
वृत् + शानच्	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्

- वाक्य में प्रयोग करते हुए शतृ–शानच् प्रत्ययान्त शब्दों में उसी लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन का प्रयोग होता है, जो विशेष्य का होता है।

यथा— पिता **गच्छन्तं पुत्रं** भोजनाय कथयति।

इस वाक्य में पिता किस प्रकार के पुत्र को भोजन के लिए कह रहा है। इसके उत्तर में 'जाते हुए पुत्र' को है। अतः 'पुत्रम्' के विशेषण रूप में 'गच्छत्' शब्द में भी द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होकर 'गच्छन्तम्' पद बना।

इसी प्रकार अन्य वाक्य भी समझे जा सकते हैं।

KAMBOZ SIR

यथा— विद्यालयं गच्छन्तीभिः बालाभिः मार्गे कपोताः दृष्टाः।
माता सेवमानाय पुत्राय आशीः ददाति।
मोदमानस्य जनस्य प्रसन्नतायाः किं कारणमस्ति?
सः उच्चैः पश्यन् पतति।
चलन्ती बालिका मार्गं पृच्छति।
सा कं पश्यन्ती गच्छति?

			पुं.	**स्त्री.**	**नपुं.**
गम् + शतृ	= गच्छत्	जाता हुआ	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
दृश् + शतृ	= पश्यत्	देखता हुआ	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
दा + शतृ	= ददत्	देता हुआ	यच्छन्	यच्छन्ती	यच्छत्
पा + शतृ	= पिबत्	पीता हुआ	पिबन्	पिबन्ती	पिबत्
भू + शतृ	= भवत्	होता हुआ	भवन्	भवन्ती	भवत्
पच् + शतृ	= पचत्	पकाता हुआ	पचन्	पचन्ती	पचत्
प्रच्छ् + शतृ	= पृच्छत्	पूछता हुआ	पृच्छन्	पृच्छन्ती	पृच्छत्
नी + शतृ	= नयत्	ले जाता हुआ	नयन्	नयन्ती	नयत्
नृत् + शतृ	= नृत्यत्	नाचता हुआ	नृत्यन्	नृत्यन्ती	नृत्यत्
चुर् + शतृ	= चोरयत्	चुराता हुआ	चोरयन्	चोरयन्ती	चोरयत्
गण् + शतृ	= गणयत्	गिनता हुआ	गणयन्	गणयन्ती	गणयत्
मिल् + शतृ	= मिलत्	मिलता हुआ	मिलन्	मिलन्ती	मिलत्
यज् + शतृ	= यजत्	यजन करता हुआ	यजन्	यजन्ती	यजत्
पाल् + शतृ	= पालयत्	पालन करता हुआ	पालयन्	पालयन्ती	पालयत्
गृह् + शतृ	= गृह्णत्	ग्रहण करता हुआ	गृह्णन्	गृह्णन्ती	गृह्णत्

KAMBOZ SIR

शानच् (आन, मान)

उदाहरण—

			पुं.	स्त्री.	नपुं.
यज् + शानच्	= यजमान	यजन करता हुआ	यजमान:	यजमाना	यजमानम्
लभ् + शानच्	= लभमान	प्राप्त करता हुआ	लभमान:	लभमाना	लभमानम्
सह् + शानच्	= सहमान	सहन करता हुआ	सहमान:	सहमाना	सहमानम्
जन् +शानच्	= जायमान	पैदा होता हुआ	जायमान:	जायमाना	जायमानम्
शीङ् + शानच्	= शयान	सोता हुआ	शयान:	शयाना	शयानम्
वृध् + शानच्	= वर्धमान	बढ़ता हुआ	वर्धमान:	वर्धमाना	वर्धमानम्

KAMBOZ SIR

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. प्रत्ययान् संयुज्य यथानिर्दिष्टं लिखत—

i) पठ् + शतृ (पुं.) ....

ii) लिख् + शतृ (स्त्री.) ....

iii) सेव् + शानच् (स्त्री.) ....

iv) सह् + शानच् (पुं.) ....

v) वृत् + शानच् (पुं.) ....

vi) हस् + शतृ (स्त्री.) ....

प्र. 2. यथानिर्दिष्टं परिवर्तनं कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत—

यथा— लिखन् बालकः पठति (स्त्रीलिङ्ग)

लिखन्ती बालिका पठति।

i) क्रीडन् बालकः पतति। (स्त्रीलिङ्गे) ....

ii) उपविशन् छात्रः हसति। (स्त्रीलिङ्गे) ....

iii) धावन्ती बालिका क्रन्दति। (पुँल्लिङ्गे) ....

iv) सः चलन् खादति। (स्त्रीलिङ्गे) ....

v) अहम् नृत्यन् न गायामि। (स्त्रीलिङ्गे) ....

vi) त्वम् याचमाना न शोभसे। (पुँल्लिङ्गे) ....

vii) ते गच्छन्तः वार्तां कुर्वन्ति। (स्त्रीलिङ्गे) ....

viii) ते धावन्त्यौ भ्रमतः। (पुँल्लिङ्गे) ....

प्र. 3. शतृप्रत्ययान्तस्य गच्छत्, गच्छन्ती शब्दयोः रूपाणि दृष्ट्वा पठत्, लिखत्, पठन्ती, लिखन्ती च इत्यादीनां शब्दानां रूपलेखनस्य अभ्यासं कुरुत—

उदाहरण—

(क) गच्छत् (पुँल्लिङ्ग)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः

चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्य:
पञ्चमी	गच्छत:	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्य:
षष्ठी	गच्छत:	गच्छतो:	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतो:	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्त:!

(ख) गच्छन्ती (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	गच्छन्ती	गच्छन्त्यौ	गच्छन्त्य:
द्वितीया	गच्छन्तीम्	गच्छन्त्यौ	गच्छन्ती:
तृतीया	गच्छन्त्या	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभि:
चतुर्थी	गच्छन्त्यै	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्य:
पञ्चमी	गच्छन्त्या:	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्य:
षष्ठी	गच्छन्त्या:	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्य:
सप्तमी	गच्छन्त्याम्	गच्छन्त्यो:	गच्छन्तीषु
सम्बोधन	हे गच्छन्ति!	हे गच्छन्त्यौ!	हे गच्छन्त्य:!

प्र. 4. कोष्ठके प्रदत्तशब्दानाम् उचितप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत—

i) .... बालिकाया: पुस्तकम् कुत्र अस्ति ? (पठन्ती)

ii) .... शिष्याम् आचार्या किंचिद् वदति। (हसन्ती)

iii) .... छात्रै: हस्यते। (गच्छत्)

iv) .... कलिकानाम् सौन्दर्यं अपूर्वं वर्तते। (विकसन्ती)

v) .... बालकाय वस्त्रं दीयते। (याचत्)

प्र. 5. उदाहरणमनुसृत्य शतृशानच्प्रत्ययौ प्रयुज्य वाक्यानि संयोजयत—

यथा— बालिका गच्छति/सा क्रीडति।

गच्छन्ती बालिका क्रीडति।

i) बालक: पठति। स: पाठं स्मरति।

ii) शिशु: चलति। स: हसति।

iii) रमा पठति। सा लिखति।

iv) साधु: उपदिशति। / स: ज्ञानवार्तां करोति।

v) याचक: याचते। स: मार्गे चलति।

KAMBOZ SIR

भूतकालिक क्त (त) क्तवतु

- भूतकालिक क्रिया के अर्थ में धातु से 'क्त' एवं 'क्तवतु' प्रत्यय का योग किया जाता है। 'क्त' प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्म अर्थ में, अकर्मक धातुओं से भाव अर्थ में तथा 'क्तवतु' प्रत्यय कर्ता अर्थ में होता है। गत्यर्थक तथा अकर्मक धातुओं से कर्ता अर्थ में 'क्त' प्रत्यय होता है।

कुछ धातुओं के क्त-क्तवतु प्रत्यययुक्त पद निम्नलिखित हैं—

क्त प्रत्यय

उदाहरण—

	पुं.	*स्त्री.*	*नपुं.*
गम् + क्त	गत:	गता	गतम्
कृ + क्त	कृत:	कृता	कृतम्
पा + क्त	पीत:	पीता	पीतम्
श्रु + क्त	श्रुत:	श्रुता	श्रुतम्
क्री + क्त	क्रीत:	क्रीता	क्रीतम्
भक्ष + क्त	भक्षित:	भक्षिता	भक्षितम्
इष् + क्त	इष्ट:	इष्टा	इष्टम्
सेव् + क्त	सेवित:	सेविता	सेवितम्
दृश् + क्त	दृष्ट:	दृष्टा	दृष्टम्
त्रस् + क्त	त्रस्त:	त्रस्ता	त्रस्तम्

क्तवतु प्रत्यय

उदाहरण—

	पुं.	*स्त्री.*	*नपुं.*
गम् + क्तवतु	गतवान्	गतवती	गतवत्
कृ + क्तवतु	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
पा + क्तवतु	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
श्रु + क्तवतु	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्

क्री + क्तवतु	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्
भक्ष् + क्तवतु	भक्षितवान्	भक्षितवती	भक्षितवत्
इष् + क्तवतु	इष्टवान्	इष्टवती	इष्टवत्
सेव् + क्तवतु	सेवितवान्	सेवितवती	सेवितवत्
दृश् + क्तवतु	दृष्टवान्	दृष्टवती	दृष्टवत्
क्षिप् + क्तवतु	क्षिप्तवान्	क्षिप्तवती	क्षिप्तवत्
ग्रह् + क्तवतु	गृहीतवान्	गृहीतवती	गृहीतवत्
चिन्त् + क्तवतु	चिन्तितवान्	चिन्तितवती	चिन्तितवत्
चुर् + क्तवतु	चोरितवान्	चोरितवती	चोरितवत्
ज्ञा + क्तवतु	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्

- क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों के रूप भी तीनों लिङ्गों में चलते हैं।
- भूतकाल की क्रिया के लिए क्तवतु प्रत्ययों के प्रयोग का छात्रोपयोगी लाभ यह है कि वाक्य में क्रिया को पुरुषानुसार नहीं बदलना पड़ता—

यथा—	राम: अगच्छत्	—	राम: गतवान्
	रमा अगच्छत्	—	रमा गतवती
	अहम् अगच्छम्	—	अहम् गतवान् / गतवती
	त्वम् अगच्छ:	—	त्वम् गतवान् / गतवती

- क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुँल्लिङ्ग में भवत्, स्त्रीलिङ्ग में नदी तथा नपुंसकलिङ्ग में जगत् के समान चलते हैं।

पुं. — गतवान् गन्तवन्तौ गतवन्त:
(इत्यादिप्रकारेण सभी विभक्तियों में)

स्त्री. — गतवती गतवत्यौ गतवत्य:
(इत्यादिप्रकारेण सभी विभक्तियों में)

नपुं. — गतवत् गतवती गतवन्ति
(इत्यादिप्रकारेण सभी विभक्तियों में)

KAMBOZ SIR

यथा—

छात्र: गतवान्।	छात्रा गतवती।	मित्रम् गतवत्।
छात्रौ गतवन्तौ।	छात्रे गतवत्यौ।	मित्रे गतवती।
बाला: गतवन्त:।	बालिका: गतवत्य:।	मित्राणि गतवन्ति।

- क्त प्रत्यययुक्त क्रिया के प्रयोग में अर्थात् कर्मवाच्य में कर्ता तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है। क्रिया के लिङ्ग वचन भी कर्म के अनुसार होते हैं।

यथा— रामेण घट: पूरित:।
रमया घट: पूरित:।
तेन पुस्तकं पठितम्।
तया पुस्तकानि पठितानि।
मित्रेण भोजनं कृतम्।
छात्रै: कथा पठिता।
आचार्यै: छात्रा: पाठिता:।

- क्त प्रत्यययुक्त शब्दों का प्रयोग जब भूतकालिक विशेषण के रूप में होता है तब क्त प्रत्ययान्त शब्द में लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन का प्रयोग विशेष्य के अनुसार होता है।

यथा— छात्र: पठितं पाठं गृहे पुन: पुन: पठति।
छात्र: कक्षायां पठितान् पाठान् गृहे स्मरति।
बाल: पठितां हास्यकथां स्मृत्वा हसति।
आचार्य: पठितानां पाठानां पुनरावृत्तिं कर्तुं कथयति।

- जाना, चलना इत्यादि अर्थ की धातुओं, अकर्मक धातुओं तथा श्लिष्ट, शी, स्था, आस्, सह् इत्यादि धातुओं से क्त प्रत्यय कर्तृवाच्य में भी होता है, अर्थात् इन धातुओं का वाक्य में अकर्मक प्रयोग होने पर क्त प्रत्यय का प्रयोग होते हुए भी कर्त्ता में प्रथमा का प्रयोग भी किया जा सकता है।

यथा— तेन गतम् / स: गत:।
तेन सुप्तम् / स: सुप्त:।

KAMBOZ SIR

स: ग्रामं प्राप्त:।

स: गृहं गत:।

स: वृक्षमारूढ:।

हरि: वैकुण्ठमधिष्ठित:।

- क्त प्रत्यययुक्त क्रिया के प्रयोग में कर्ता प्राय: तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है। क्रिया, लिङ्ग एवं वचन भी कर्म के अनुसार होते हैं।

KAMBOZ SIR

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. क्त-क्तवतुप्रत्ययसंयोजनेन पदानि रचयित्वा वाक्यपूर्तिं कुरुत—

i) बालकेन .... (हस् + क्त)

ii) बालक: .... (हस् + क्तवतु)

iii) शिक्षकेण छात्र: पठनाय .... (कथ् + क्त)

iv) शिक्षका: छात्रान् पठनाय .... (कथ् + क्तवतु)

v) पुत्री पितरम् पुस्तकम् .... (याच् + क्तवतु)

vi) माता सुतायै भोजनं .... (दा + क्तवतु)

vii) मम जनकेन भिक्षुकाय रूप्यकाणि .... (दा + क्त)

viii) छात्रेण ऋषे: ज्ञानोपदेश: .... (श्रु + क्त)

प्र. 2. स्तम्भयो: यथोचितं योजयत—

अ	ब
अहम् जलम्	पठितानि
सा पुस्तकम्	पचितवन्त:
त्वम् पाठम्	पीतवान् / पीतवती
मया पुस्तकानि	पठितवती
यूयम् भोजनं	लिखितवान्

प्र. 3. उदाहरणमनुसृत्य भूतकालिकक्रियाणां स्थाने क्तवतुप्रत्ययप्रयोगेण वाक्यपरिवर्तनं कुरुत—

यथा— अध्यापक: उद्दण्डं छात्रम् अदण्डयत्।
अध्यापक: उद्दण्डं छात्रं दण्डितवान्।

i) छात्र: कक्षायाम् उच्चै: अहसत्।

ii) माता भोजनम् अपचत्।

iii) काक: घटे पाषाणखण्डानि अक्षिपत्।

iv) छात्रा: बसयानस्य प्रतीक्षायाम् अतिष्ठन्।

v) कन्या: उद्याने अक्रीडन्।

KAMBOZ SIR

प्र. 4. उदाहरणमनुसृत्य भूतकालिकक्रियाणां स्थाने वाक्यपरिवर्तनं कुरुत—

यथा— अध्यापक: छात्रम् पठनाय अकथयत्।
अध्यापकेन छात्र: पठनाय कथित:।

i) वानर: मकराय जम्बूफलानि अयच्छत्।
ii) मकर: वानरं गृहं चलितुम् अकथयत्।
iii) नकुल: सर्पम् अमारयत्।
iv) श्याम: लेखम् अलिखत्।
v) रमा कथाम् अपठत्।

प्र. 5. उदाहरणमनुसृत्य अशुद्धवाक्यानि शुद्धीकृत्य लिखत—

यथा— बालकेन जलं पीतवान्
i) बालक:जलं पीतवान्।
ii) बालकेन जलं पीतम्।

i) मोहनेन पुस्तकं नीतवान्।
i) ....
ii) ....

ii) गीता पाठं पठितम्।
i) ....
ii) ....

iii) आचार्येण शिष्य उपदिष्टवान्।
i) ....
ii) ....

iv) कन्या गृहे क्रीडितम्।
i) ....
ii) ....

v) स: भोजनम् कृतम् ।
i) ....
ii) ....

KAMBOZ SIR

तव्यत् (तव्य) तथा अनीयर् (अनीय)

'चाहिए' या 'योग्य' के अर्थों में धातु में 'तव्यत्' (तव्य) तथा 'अनीयर्' (अनीय) प्रत्ययों का योग किया जाता है।

गम्	+	तव्यत्	=	गन्तव्यम्
पठ्	+	तव्यत्	=	पठितव्यम्
हस्	+	तव्यत्	=	हसितव्यम्
रक्ष्	+	तव्यत्	=	रक्षितव्यम्
जि	+	तव्यत्	=	जेतव्यम्
दा	+	तव्यत्	=	दातव्यम्
कृ	+	तव्यत्	=	कर्तव्यम्
चुर्	+	तव्यत्	=	चोरयितव्यम्
दृश्	+	तव्यत्	=	द्रष्टव्यम्
स्मृ	+	तव्यत्	=	स्मर्तव्यम्
गम्	+	अनीयर्	=	गमनीयम्
पठ्	+	अनीयर्	=	पठनीयम्
हस्	+	अनीयर्	=	हसनीयम्
रक्ष्	+	अनीयर्	=	रक्षणीयम्
जि	+	अनीयर्	=	जयनीयम्
दा	+	अनीयर्	=	दानीयम्
कृ	+	अनीयर्	=	करणीयम्
चुर्	+	अनीयर्	=	चोरणीयम्
दृश्	+	अनीयर्	=	दर्शनीयम्
स्मृ	+	अनीयर्	=	स्मरणीयम्
स्ना	+	अनीयर्	=	स्नानीयम्
श्रु	+	अनीयर्	=	श्रवणीयम्
लिख्	+	अनीयर्	=	लेखनीयम्

KAMBOZ SIR

- वाक्य में तव्यत् तथा अनीयर् प्रत्ययों से युक्त शब्दों के योग में कर्ता तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है। अर्थात् इनका सकर्मक धातुओं के योग में कर्मवाच्य में अथवा अकर्मक धातुओं के योग में भाव में ही प्रयोग किया जाता है।
- सकर्मक धातुओं से तव्यत् प्रत्यय लगने पर बने शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

यथा— मया ग्रन्थ: पठितव्य:।
मया कथा पठितव्या।
मया पुस्तकं पठितव्यम्।

- इन प्रत्ययों में कर्ता में तृतीया एवं कर्म में प्रथमा का प्रयोग होता है तथा क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

यथा— बालकेन पाठ: पठितव्य:।
बालकेन कथा पठितव्या।
बालकेन पुस्तकम् पठितव्यम्।

- क्रिया के रूप में इन प्रत्ययों का प्रयोग 'चाहिए' के अर्थ में तथा विशेषण के रूप में इन प्रत्ययों का प्रयोग 'योग्य' के अर्थ में होता है।

यथा— छात्रेण पठितव्य: पाठ: पठितव्य:।

इस वाक्य में 'पाठ:' से पूर्व प्रयुक्त 'पठितव्य:' विशेषण के रूप में है तथा पश्चात् प्रयुक्त पठितव्य: क्रिया रूप में है, अत: इसका अर्थ हुआ— छात्र के द्वारा पढ़ने योग्य पाठ को पढ़ा जाना चाहिए।

एवमेव श्रावणीया कथा श्रावयितव्या।
सुनाने योग्य कहानी सुनानी चाहिए।

यत्-ण्यत्-क्यप् प्रत्यय

इन तीनों प्रत्ययों का 'य' ही शेष रहता है तथा तीनों एक ही अर्थ 'चाहिए' अथवा 'योग्य' के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। परन्तु इनके प्रयोग स्थल भिन्न-भिन्न होते हैं।

यत्— अधिकांशत: अजन्त धातुओं के साथ 'यत्' प्रत्यय प्रयुक्त होता है और धातु के 'इकार' को 'ए' और उसको 'अय्' आदेश तथा 'उकार' को 'ओ' और उसको 'अव्' हो जाता है।

KAMBOZ SIR

उदाहरण—

	पुं.	*स्त्री.*	*नपुं.*
जि+ यत्	जेय:	जेया	जेयम्
गै+ यत्	गेय:	गेया	गेयम्
चि+यत्	चेय:	चेया	चेयम्
श्रु+ यत्	श्रव्य:	श्रव्या	श्रव्यम्
दा+ यत्	देय:	देया	देयम्
भू+ यत्	भव्य:	भव्या	भव्यम्
नी+ यत्	नेय:	नेया	नेयम्
स्था+यत्	स्थेय:	स्थेया	स्थेयम्

ण्यत्— अधिकांशत: ऋकारान्त तथा हलन्त धातुओं से परे 'चाहिए' तथा 'योग्य' अर्थ को बताने के लिए 'ण्यत्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है और ण्यत् से पूर्व 'ऋ' की वृद्धि हो जाती है। हलन्त धातु की उपधा में यदि 'अ' हो तो उसे वृद्धि करने पर दीर्घ 'आ' हो जाता है। यदि उपधा में इ, उ या ऋ हो तो क्रमश: ए, और ओ 'अर्' हो जाते हैं। इनके रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

उदाहरण—

	पुं.	*स्त्री.*	*नपुं.*
स्मृ+ण्यत् (य)	स्मार्य:	स्मार्या	स्मार्यम्
लिख्+ण्यत् (य)	लेख्य:	लेख्या	लेख्यम्
पठ्+ण्यत् (य)	पाठ्य:	पाठ्या	पाठ्यम्
त्यज्+ण्यत् (य)	त्याज्य:	त्याज्या	त्याज्यम्
वच्+ण्यत् (य)	वाच्य:	वाच्या	वाच्यम्
कृ+ण्यत् (य)	कार्य:	कार्या	कार्यम्
हृ+ण्यत् (य)	हार्य:	हार्या	हार्यम्
सेव् + ण्यत् (य)	सेव्य:	सेव्या	सेव्यम्
चुर् + ण्यत् (य)	चौर्य:	चौर्या	चौर्यम्
ग्रह् + ण्यत् (यि)	ग्राह्य:	ग्राह्या	ग्राह्यम्

KAMBOZ SIR

क्यप्— √इ (जाना), √स्तु (स्तुति करना), √शास् (कहना), √वृ (वरण करना), √दृ (आदर करना) आदि कुछ धातुओं से 'क्यप्' प्रत्यय होता है। इस प्रत्यय के योग से धातु में 'गुण' या वृद्धि नहीं होती तथा ह्रस्व स्वरान्त धातु के बाद 'त्' आगम होता है।

उदाहरण—

इ + क्यप् = इत्य (जिस के पास जाना चाहिए)

शास् + क्यप् = शिष्य (जिसे उपदेश देना/कहना चाहिए)

स्तु + क्यप् = स्तुत्य (स्तुति के योग्य)

वृ + क्यप् = वृत्य (वरण करने/चुनने योग्य) इत्यादि।

KAMBOZ SIR

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. कोष्ठके दत्तान् प्रकृतिप्रत्ययान् संयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—

i) रामस्य चरित्रं सर्वैः .... (अनु + कृ + अनीयर्)

ii) बालैः कन्दुकम् .... (क्रीड् + तव्यत्)

iii) अस्माभिः गुरूपदेशः .... (श्रु + तव्यत्)

iv) मया नौका .... (आ + रुह् + अनीयर्)

v) कः अत्र आगत्य .... (लिख् + तव्यत्) लेखं लेखिष्यति ?

प्र. 2. कृ— कर्तव्यम्, करणीयम् इति उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितैः धातुभिः द्वे द्वे पदे रचयत—

i)	गम्	....	....
ii)	स्मृ	....	....
iii)	नी	....	....
iv)	दृश्	....	....
v)	दा	....	....

प्र. 3. स्तम्भौ यथोचितं योजयत—

अ	**ब**
दुग्धम्	रक्षणीयाः
पुस्तकानि	आरोहणीया
ईश्वरः	पातव्यम्
नौका	अध्येतव्याः
वृक्षाः	पठितव्यानि
कथा	स्मरणीयः
ग्रन्थाः	लेखितव्याः
लेखाः	श्रवणीया

KAMBOZ SIR

प्र. 4. यथास्थानं प्रकृतिप्रत्यययोगं विभागं वा कुरुत—

i) पेयम् ....
ii) दा + यत् ....
iii) सेव्यम् ....
iv) कृ + ण्यत् ....
v) कर्त्तव्य: ....
vi) प्र + आप् + तव्यत् ....
vii) स्मरणीय: ....
viii) हस् + अनीयर् ....
ix) लेखनीयम् ....
x) प्रच्छ् + तव्यत् ....

प्र. 5. शुद्धपदेन वाक्यपूर्तिं कुरुत—

i) जलम् .... (पातव्यम्/पीतव्यम्)
ii) पाठ: .... (पठितव्य:/पठितव्यम्)
iii) शत्रु: .... (जेतव्य:/जितव्य:)
iv) असत्यवचनम् .... (त्याज्यम्/त्याज्य:)
v) अपेयं जलम् .... (त्याग्यम्/त्याज्यम्)
vi) धनम् .... (लभ्यम्/लभियम्)

KAMBOZ SIR

णिनि (इन्)

- कर्ता अर्थ में ग्रह् आदि धातुओं से 'णिनि' (इन्) प्रत्यय का योग किया जाता है।

ग्रह् + णिनि	=	ग्राहिन्	=	ग्राही
स्था + णिनि	=	स्थायिन्	=	स्थायी
शाल + णिनि	=	शालिन्	=	शाली
दा + णिनि	=	दायिन्	=	दायी

कर्तृवाचक (ण्वुल् तथा तृच्)

- कर्ता अर्थ में किसी भी धातु से 'ण्वुल्' (वु) तथा 'तृच्' (तृ) प्रत्ययों का योग किया जाता है। 'वु' का अक हो जाता है। ण्वुल् के लगने पर धातु के अंत में स्थित स्वर की वृद्धि होती है तथा उपधा स्थित लघु वर्ण का गुण होता है।

उदाहरण—

पच् + ण्वुल् (अक)	=	पाचक:
श्रु + ण्वुल् (अक)	=	श्रावक:
पठ् + ण्वुल् (अक)	=	पाठक:
नृत् + ण्वुल् (अक)	=	नर्तक:
लिख् + ण्वुल् (अक)	=	लेखक:
सिच् + ण्वुल् (अक)	=	सेचक:
प्र + आप् + ण्वुल् (अक)	=	प्रापक:
त्रस् + ण्वुल् (अक)	=	त्रासक:
नी + ण्वुल् (अक)	=	नायक:
ग्रह् + ण्वुल् (अक)	=	ग्राहक:
हन् + तृच् = हन्तृ	=	हन्ता
जि + तृच् = जेतृ	=	जेता
श्रु + तृच् = श्रोतृ	=	श्रोता

KAMBOZ SIR

नी + तृच् = नेतृ	=	नेता
दा + तृच् = दातृ	=	दाता
कृ + तृच् = कर्तृ	=	कर्ता
कथ् + तृच् = कथयितृ	=	कथयिता
वच् + तृच् = वक्तृ	=	वक्ता

क्तिन् (ति)

- भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए धातु के साथ 'क्तिन्' (ति) प्रत्यय का प्रयोग होता है। क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग होते हैं। इनके रूप 'मति' शब्द के रूपों की भाँति चलते हैं।

श्रु + क्तिन्	=	श्रुति:
भी + क्तिन्	=	भीति:
कृ + क्तिन्	=	कृति:
भज् + क्तिन्	=	भक्ति:
दृश् + क्तिन्	=	दृष्टि:
मन् + क्तिन्	=	मति:
बुध् + क्तिन्	=	बुद्धि:
वच् + क्तिन्	=	उक्ति:
प्र + आप् + क्तिन्	=	प्राप्ति:
स्तु + क्तिन्	=	स्तुति:

ल्युट् (यु = अन)

- भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए धातु से 'ल्युट्' (यु = अन) प्रत्यय का योग किया जाता है। इस प्रत्यय के (यु = अन) को धातु के साथ जोड़ा जाता है।
- ल्युट् प्रत्ययान्त शब्द प्राय: नपुंसकलिङ्ग में होते हैं, क्योंकि ल्युट् प्रत्यय का अर्थ 'भाव' होता है। इनके रूप 'फल' शब्द के रूपों की तरह चलते हैं।

उदाहरण—

भू + ल्युट् (यु = अन)	=	भवनम्

KAMBOZ SIR

पा + ल्युट् (यु = अन)	=	पानम्
श्रु + ल्युट् (यु = अन)	=	श्रवणम्
गम् + ल्युट् (यु = अन)	=	गमनम्
पठ् + ल्युट् (यु = अन)	=	पठनम्
लिख् + ल्युट् (यु = अन)	=	लेखनम्
दा + ल्युट् (यु = अन)	=	दानम्
भज् + ल्युट् (यु = अन)	=	भजनम्
हन् + ल्युट् (यु = अन)	=	हननम्
ग्रह् + ल्युट् (यु = अन)	=	ग्रहणम्
यज् + ल्युट् (यु = अन)	=	यजनम्
गण् + ल्युट् (यु = अन)	=	गणनम्
पाल् + ल्युट् (यु = अन)	=	पालनम्
सेव् + ल्युट् (यु = अन)	=	सेवनम्

KAMBOZ SIR

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. उदाहरणमनुसृत्य पदेषु प्रयुक्तान् प्रकृतिप्रत्ययान् लिखत—

	पदम्	प्रकृति:	प्रत्यय:
उदाहरण—	**गति:**	**गम्**	**क्तिन्**
i)	हसनम्	....	....
ii)	पाठक:	....	....
iii)	खाद्य:	....	....
iv)	दृश्य:	....	....
v)	भक्ति:	....	....
vi)	सौभाग्यशालिन्	....	....
(vii)	नेता	....	....
(viii)	गायक:	....	....

प्र. 2. अधोलिखितप्रत्ययानां प्रयोगेण पञ्च, पञ्च पदानि रचयित्वा स्वपुस्तिकासु लिखत— तृच्, क्तिन्, ण्वुल्, ल्युट्, यत्।

प्र. 3. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदेषु क: प्रत्यय: प्रयुक्त: इति कोष्ठकेभ्य: चित्वा लिखत—

i) सज्जनानाम् **उक्ति:** पालनीया। (ल्युट्/क्तिन्) ....

ii) **सेचक:** क्षेत्रं सिञ्चति। (ल्युट्/ण्वुल्) ....

iii) **श्रावक:** कथां श्रावयति। (ल्युट्/ण्वुल्) ....

iv) भक्त: **भक्तिं** करोति। (ण्वुल्/क्तिन्) ....

प्र. 4. शुद्धरूपं चित्वा लिखत—

i) गम् + क्तिन् — गति: / गमति: ....

ii) दा + तृच् — दातृ / दानी ....

iii) नी + ण्वुल् — नाविक: / नायक: ....

iv) नृत् + ल्युट् — नर्तक: / नर्तनम् ....

v) दृश् + ल्युट् — दृश्यम् / दर्शनम् ....

KAMBOZ SIR

2. तद्धित प्रत्यय

- संज्ञा, विशेषण तथा कृदन्त आदि (प्रातिपदिक) शब्दों के साथ लगकर अर्थ परिवर्तन करने वाले प्रत्ययों को **तद्धित** प्रत्यय कहते हैं।
- तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों में कारक विभक्तियाँ लगती हैं।

विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होने वाले तद्धित प्रत्यय अनेक हैं। कतिपय प्रमुख तद्धित प्रत्ययों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है—

मतुप् (मत्)

'वाला' अर्थात् 'इसके पास है', इस अर्थ में स्वरान्त शब्दों से 'मतुप्' प्रत्यय का योग किया जाता है। 'उप्' का लोप होकर शब्दों से केवल 'मत्' जुड़ता है।

उदाहरण—

शक्ति + मतुप्	=	शक्तिमत् (शक्तिमान्), शक्तिवाला
श्री + मतुप्	=	श्रीमत् (श्रीमान्), श्रीवाला
धी + मतुप्	=	धीमत् (धीमान्), बुद्धिवाला
बुद्धि + मतुप्	=	बुद्धिमत् (बुद्धिमान्), बुद्धिवाला
मधु + मतुप्	=	मधुमत् (मधुमान्), मधुवाला
इक्षु + मतुप्	=	इक्षुमत् (इक्षुमान्), गन्नेवाला
कीर्ति + मतुप्	=	कीर्तिमत् (कीर्तिमान्), कीर्तिवाला

वतुप् (वत्)

- 'वाला' या 'इससे युक्त' अर्थ में अकारान्त तथा अनेक हलन्त शब्दों से 'वतुप्' (वत्) प्रत्यय होता है।
- 'शब्दान्त' या 'उपधा' में अ/आ या म् होने पर मतुप् के स्थान पर 'वतुप्' प्रत्यय लगता है।

उदाहरण—

धन + वतुप्	=	धनवत् (धनवान्), धनवाला
बल + वतुप्	=	बलवत् (बलवान्), बलवाला

KAMBOZ SIR

रूप + वतुप्	=	रूपवत् (रूपवान्), रूपवाला
विद्या + वतुप्	=	विद्यावत् (विद्यावान्), विद्यावाला
गुण + वतुप्	=	गुणवत् (गुणवान्), गुणवाला
लक्ष्मी + वतुप्	=	लक्ष्मीवत् (लक्ष्मीवान्), लक्ष्मीवाला

- मतुप्, वतुप् प्रत्ययों से युक्त शब्दों के रूप पुँल्लिङ्ग में 'भवत्', स्त्रीलिङ्ग में 'नदी' तथा नपुंसकलिङ्ग में 'जगत्' शब्द के समान चलते हैं।

इनि (इन्)

- 'वाला' या 'युक्त' अर्थ में अकारान्त शब्दों से 'इनि' (इन्) प्रत्यय का योग किया जाता है।

उदाहरण—

रथ + इनि	=	रथिन् (रथी), रथवाला या रथ से युक्त
दण्ड + इनि	=	दण्डिन् (दण्डी), दण्डवाला या दण्ड से युक्त
बल + इनि	=	बलिन् (बली), बलवाला या बल से युक्त
गुण + इनि	=	गुणिन् (गुणी), गुणवाला या गुण से युक्त
धन + इनि	=	धनिन् (धनी), धनवाला या धन से युक्त

- वाक्यों में इनि प्रत्यय युक्त शब्दों का आवश्यकतानुसार शब्दरूप बनाकर प्रयोग किया जाता है।

यथा— गुणी जन: शोभते। (प्रथमा, एकवचन)
गुणिन: सर्वत्र पूज्यन्ते। (प्रथमा, बहुवचन)
धनिन: अद्यत्वे अधिकं धनं लब्धुं यतन्ते। (प्रथमा, बहुवचन)
बलिना पुरुषेण सर्वत्र बलस्य एव प्रयोग: क्रियते। (तृतीया, एकवचन)

तरप् (तर)

- दो में किसी एक को बेहतर बताने के लिए 'तरप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

KAMBOZ SIR

उदाहरण—

प्रशस्य + तरप्	= प्रशस्यतर:	चतुर + तरप्	= चतुरतर:
गुरु + तरप्	= गुरुतर:	दीर्घ + तरप्	= दीर्घतर:
लघु + तरप्	= लघुतर:	सुन्दर + तरप्	= सुन्दरतर:
पटु + तरप्	= पटुतर:	स्थिर + तरप्	= स्थिरतर:
कुशल + तरप्	= कुशलतर:	तीव्र + तरप्	= तीव्रतर:
उच्च + तरप्	= उच्चतर:	मधुर + तरप्	= मधुरतर:

यथा— रामलक्ष्मणयो: राम: प्रशस्यतर: आसीत्। अश्वगजयो: अश्व: तीव्रतर:। मोहनसोहनयो: मोहन: पटुतर:।

तमप् (तम)

- दो से अधिक में किसी एक की सर्वश्रेष्ठता प्रकट करने के लिए 'तमप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण—

उच्च + तमप्	= उच्चतम:	मधुर + तमप्	= मधुरतम:
गुरु + तमप्	= गुरुतम:	दीर्घ + तमप्	= दीर्घतम:
लघु + तमप्	= लघुतम:	स्थिर + तमप्	= स्थिरतम:
पटु + तमप्	= पटुतम:	सुन्दर + तमप्	= सुन्दरतम:
कुशल + तमप्	= कुशलतम:	तीव्र + तमप्	= तीव्रतम:

यथा— कक्षाया: छात्रेषु मोहन: पटुतम:, पशुषु अश्व: धावने तीव्रतम: इत्यादि

मयट् (मय)

- प्रचुरता के अर्थ में 'मयट्' (मय) प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।
- वस्तुवाचक शब्दों से (खाद्य वस्तुओं को छोड़कर) विकार अर्थ में भी मयट् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण—

शान्ति + मयट्	=	शान्तिमय:
आनन्द + मयट्	=	आनन्दमय:

KAMBOZ SIR

सुख + मयट्	=	सुखमय:
तेज: + मयट्	=	तेजोमय:
मृत् + मयट्	=	मृण्मय:
स्वर्ण + मयट्	=	स्वर्णमय:
लौह + मयट्	=	लौहमय:

अण् (अ)

- अपत्य (पुत्र या पुत्री) अर्थ में शब्द से अण् प्रत्यय का योग किया जाता है। अण् प्रत्यय करने पर आदि स्वर की वृद्धि होती है।

उदाहरण—

वसुदेव + अण्	=	वासुदेव:	मनु + अण्	=	मानव:
वशिष्ठ + अण्	=	वाशिष्ठ:	पुत्र + अण्	=	पौत्र:
विश्वमित्र + अण्	=	वैश्वामित्र:	कुरु + अण्	=	कौरव:
अश्वपति + अण्	=	आश्वपत:	दनु + अण्	=	दानव:
यदु + अण्	=	यादव:	पण्डु + अण्	=	पाण्डव:

यथा— वासुदेव: कृष्ण: पूज्य: अस्ति।

- भाव में भी अण् प्रत्यय होता है—

कुशल + अण्	=	कौशलम्
गुरु + अण्	=	गौरवम्
शिशु + अण्	=	शैशवम्
मृदु + अण्	=	मार्दवम्
लघु + अण्	=	लाघवम्

यथा— कर्मसु कौशलं शोभनम् अस्ति।

ठक् (इक)

- शब्दों से भाव अर्थ में 'ठक्' प्रत्यय का विधान किया जाता है। ठक् का 'इक' हो जाता है तथा शब्द के आदि स्वर की वृद्धि होती है।

उदाहरण—

वाच् + ठक्	=	वाचिक

KAMBOZ SIR

शरीर + ठक् = शारीरिक
धर्म + ठक् = धार्मिक
कर्म + ठक् = कार्मिक
नगर + ठक् = नागरिक
भूत + ठक् = भौतिक
अध्यात्म + ठक् = आध्यात्मिक

इतच् (इत)

- 'सहित' या 'युक्त' अर्थ में तारक आदि शब्दों से 'इतच्' प्रत्यय का योग किया जाता है।

उदाहरणम्—

तारक + इतच्	= तारकित:	बुभुक्षा + इतच्	= बुभुक्षित:
पिपासा + इतच्	= पिपासित:	कण्टक + इतच्	= कण्टकित:
कुसुम + इतच्	= कुसुमित:	गर्व + इतच्	= गर्वित:
क्षुधा + इतच्	= क्षुधित:	व्याधि + इतच्	= व्याधित:
अंकुर + इतच्	= अंकुरित:	उत्कण्ठा + इतच्	= उत्कण्ठित:
हर्ष + इतच्	= हर्षित:	तरंग + इतच्	= तरंगित:
दीक्षा + इतच्	= दीक्षित:		

यथा— बुभुक्षित: किं न करोति पापम्।
क्षुधित: बालक: इतस्तत: भ्रमति।
पिपासित: काक: जलम् अन्वेषयति।

त्व तथा तल्

- भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए शब्दों से 'त्व' और 'तल्' (ता) प्रत्ययों का योग किया जाता है।

उदाहरण—

मूर्ख + त्व	= मूर्खत्वम्	मूर्ख + तल्	= मूर्खता
विद्वस् + त्व	= विद्वत्वम्	विद्वस् + तल्	= विद्वत्ता

KAMBOZ SIR

महत् + त्व	= महत्त्वम्	महत् + तल्	= महत्ता
पवित्र + त्व	= पवित्रत्वम्	पवित्र + तल्	= पवित्रता
पशु + त्व	= पशुत्वम्	पशु + तल्	= पशुता
गुरु + त्व	= गुरुत्वम्	गुरु + तल्	= गुरुता
लघु + त्व	= लघुत्वम्	लघु + तल्	= लघुता
मित्र + त्व	= मित्रत्वम्	मित्र + तल्	= मित्रता

- 'त्व' प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप 'फल' शब्द की तरह चलते हैं।
- 'ता' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप 'रमा' शब्द की तरह चलते हैं।

यत्

- शरीर के अवयववाची शब्दों से 'होने वाला' इस अर्थ में 'यत्' प्रत्यय का योग किया जाता है।

उदाहरण—

कण्ठ + यत्	= कण्ठे भवम्	कण्ठ्यम्
दन्त + यत्	= दन्ते भवम्	दन्त्यम्
ओष्ठ + यत्	= ओष्ठे भवम्	ओष्ठ्यम्

थाल् (था)

- किम् आदि सर्वनामों से 'प्रकार' अर्थ में 'थाल्' प्रत्यय का योग किया जाता है। थाल् का 'था' शेष रहता है।

उदाहरण—

यद् + थाल्	=	यथा
तद् + थाल्	=	तथा
सर्व + थाल्	=	सर्वथा
उभय + थाल्	=	उभयथा

KAMBOZ SIR

तसिल्

- **प्रयाग + तसिल् = प्रयागतः**— पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में 'तसिल्' प्रत्यय का प्रयोग होता है। तसिल् का केवल 'तस्' भाग बचता है। तसिल् प्रत्यय जोड़ने पर जो शब्द बनते हैं, वे अव्यय होते हैं। जब कोई वस्तु या व्यक्ति किसी स्थान से अलग होते हैं तो उस स्थान में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे— देवदत्तः 'प्रयागात् काशीं गच्छति' वाक्य में देवदत्त, प्रयाग से अलग हो रहा है। अतः प्रयाग में पञ्चमी हुई है। प्रयागात् के स्थान पर प्रयागतः (तसिल् प्रत्ययान्त) का भी प्रयोग हो सकता है।

यथा—

पञ्चमी पदानि	**तसिल् पदानि**	
ग्रामात्	ग्रामतः	ग्रामतः वनं दूरे नास्ति।
वृक्षात्	वृक्षतः	वृक्षतः पत्राणि पतन्ति।
वाराणस्याः	वाराणसीतः	वाराणसीतः प्रयागः पश्चिमे वर्तते।
नवदिल्ल्याः	नवदिल्लीतः	नवदिल्लीतः हरिद्वारनगरम् उत्तरे वर्तते।
तस्मात्	ततः	ततः आगच्छति।
एतस्मात्	इतः	इतः गच्छति।

KAMBOZ SIR

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. निम्नलिखितप्रयोगान् ध्यानेन पठित्वा स्थूलपदेषु प्रकृति-प्रत्ययानां विभागं कुरुत—

i) कालिदास: **कीर्तिमान्** आसीत्। ....
ii) एतौ बालकौ **बलवन्तौ** स्त:। ....
iii) एते जना: **गुणवन्त:** सन्ति। ....
iv) धनी सर्वत्र **समादरं** प्राप्नोति। ....
v) बलिनौ **अन्यायं** न सहत:। ....
vi) **गुणिन:** आत्मश्लाघां न कुर्वन्ति। ....
vii) पिता आकाशात् **श्रेष्ठतर:**। ....
viii) धरित्री मातु: अपि **गंभीरतरा।** ....
ix) कदलीफलम् आम्रात् **मधुरतमम्।** ....
x) हिमालय: भारतस्य **उच्चतम:** पर्वत: अस्ति। ....

प्र. 2. प्रत्ययं संयुज्य पदनिर्माणं कुरुत—

i) श्री + मतुप् ....
ii) शक्ति + वतुप् ....
iii) धन + वतुप् ....
iv) बल + वतुप् ....
v) गुरु + तल् ....
vi) सुन्दर + मयट् ....
vii) पटु + तमप् ....
viii) मृत् + मयट् ....
ix) वसुदेव + अण् ....
x) धर्म + ठक् ....
xi) मित्र + तल् ....
xii) विद्वस् + त्व ....

प्र. 3. कोष्ठके दत्तै: पदै: रिक्तस्थानानि पूरयत—

i) धर्मेन्द्र: बालाभ्याम् ....। (प्रशस्यतर:/ प्रशस्यतम:)
ii) ....राज्ञ: दशरथस्य राजगुरु: आसीत्। (वाशिष्ठ: / वशिष्ठ:)

KAMBOZ SIR

iii) बालिकासु माया .... (चतुरतरा / चतुरतमा)
iv) पाण्डवानाम् ....दर्शनीयम् आसीत्। (युद्धकौशलम्/युद्ध कुशलम्)
v) .... आभूषणम् बहुमूल्यं भवति। (स्वर्णमय: / स्वर्णमयम्)
vi) रावण: .... आसीत् । (दानव: / दनुज:)
vii) .... जन: औषधिं सेवते। (व्याधित: / व्याधि:)
viii) बालिकासु चंद्रकला .... वदति (मधुरतरम् / मधुरतमम्)
ix) बालकेषु विजयस्य टङ्कणगति: .... (तीव्रतरा / तीव्रतमा)

प्र. 4. विशेष्यविशेषणे परस्परं योजयत—

i) कीर्तिमान् — मञ्जूषा
ii) उत्तमम् — पुरुष:
iii) उच्चतम: — कार्यम्
iv) लौहमयी — पर्वत:

प्र. 5. उदाहरणमनुसृत्य प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत—

यथा— धीमान् = धी + मतुप्

i) मधुरतम: ....
ii) तीव्रतर: ....
iii) वासुदेव: ....
iv) कार्मिक: ....
v) दन्त्यम् ....
vi) मृण्मय: ....
vii) पिपासित: ....
viii) लघुता ....
ix) वीरतम: ....
x) नदीत: ....

प्र. 6. अधोलिखितेषु शब्देषु तसिल्प्रत्ययं संयुज्य वाक्यरचनां कुरुत—

पर्वत:, नगरम्, भूमि:, भानु:, नदी।

प्र. 7. कोष्ठकेषु प्रदत्तेषु शब्देषु तसिल्प्रत्ययं संयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—

i) छात्र: .... आगच्छति । (विद्यालय)
ii) देवदत्त: .... काशीं गच्छति। (मथुरा)
iii) वयं .... जलम् आहराम:। (नदी)
iv) स: .... गत:। (देवालय)

3. स्त्री प्रत्यय

पुँल्लिङ्ग शब्दों में जिन प्रत्ययों को लगाकर स्त्रीलिङ्ग या स्त्रीवाचक शब्द बनाए जाते हैं, उन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

1. आ (टाप्, डाप्, चाप्)
2. ई (ङीप्, ङीष्, ङीन्)

आ (टाप्, डाप्, चाप्)

- अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाने के लिए टाप् 'आ' प्रत्यय लगाया जाता है।

उदाहरण—

अश्व + टाप् (आ)	=	अश्वा
सुत + टाप् (आ)	=	सुता
सरल + टाप् (आ)	=	सरला
प्रथम + टाप् (आ)	=	प्रथमा

- यदि पुँल्लिङ्ग शब्द के अन्त में 'अक' हो तो 'आ' प्रत्यय लगने पर 'इक' हो जाता है।

उदाहरण—

बालक + आ	=	बालिका
मूषक + आ	=	मूषिका
शिक्षक + आ	=	शिक्षिका
साधक + आ	=	साधिका
गायक + आ	=	गायिका
नायक + आ	=	नायिका

ई (ङीप्, ङीष्, ङीन्)

- ऋकारान्त एवं नकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग शब्द में बदलने के लिए 'ई' प्रत्यय लगाया जाता है।

उदाहरण—

कर्तृ + ई	=	कर्त्री

KAMBOZ SIR

दातृ + ई	=	दात्री
धातृ + ई	=	धात्री
तपस्विन् + ई	=	तपस्विनी
गुणिन् + ई	=	गुणिनी

- अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों तथा कतिपय जातिवाचक शब्दों में भी 'ई' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाया जाता है।

उदाहरण—

नद + ई	=	नदी
देव + ई	=	देवी
भयङ्कर + ई	=	भयङ्करी
गोप + ई	=	गोपी
महिष + ई	=	महिषी
शूकर + ई	=	शूकरी
ब्राह्मण + ई	=	ब्राह्मणी
मृग + ई	=	मृगी

- द्विगु समास का अन्तिम शब्द यदि अकारान्त है तो 'ई' प्रत्यय लगता है।

उदाहरण—

त्रिलोक + ई	=	त्रिलोकी
पंचवट + ई	=	पंचवटी

- शतृ प्रत्ययान्त शब्दों को स्त्रीलिङ्ग में बदलने के लिए 'ई' प्रत्यय लगता है।

उदाहरण—

गच्छत् + ई	=	गच्छन्ती
वदत् + ई	=	वदन्ती
दर्शयत् + ई	=	दर्शयन्ती

- इसके अतिरिक्त भी 'ई' प्रत्यय के योग से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाए जाते हैं।

उदाहरण—

श्रीमत् + ई	=	श्रीमती

KAMBOZ SIR

भवत् + ई	=	भवती
गतवत् + ई	=	गतवती

- जाया अर्थ में पुँल्लिङ्ग शब्दों से (ङीष्) (ई) प्रत्यय लगाया जाता है।

उदाहरण—

इन्द्र + ङीष्	=	इन्द्राणी
वरुण + ङीष्	=	वरुणानी
भव + ङीष्	=	भवानी
मातुल + ङीष्	=	मातुलानी
रुद्र + ङीष्	=	रुद्राणी

- कुछ शब्दों से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाने के लिए 'आ' और 'ई' दोनों प्रत्यय लगाए जाते हैं।

उदाहरण—

आचार्य-आचार्या (जो स्वयं पढ़ाती है) आचार्याणी (आचार्य की पत्नी), उपाध्याय-उपाध्याया-उपाध्यायानी एवमेव क्षत्रिय-क्षत्रिया-क्षत्रियाणी

ति प्रत्यय

- युवन् शब्द से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'ति' प्रत्यय लगाया जाता है।

युवन् + ति	=	युवति:

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. निर्देशानुसारं लिङ्गपरिवर्तनं कुरुत—

i) बालक .... (स्त्री.)
ii) आराध्या .... (पुं.)
iii) प्रथमा .... (पुं.)
iv) साधक .... (स्त्री.)
v) आचार्या .... (पुं.)
vi) धातृ .... (स्त्री.)

KAMBOZ SIR